INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 8 | SEPTEMBER – 2025

# ''मांड्यम पार्थसारथी तिरुमलाचार्य : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से वैश्विक अराजकतावाद तक की यात्रा''

**Monika Saini**
**Ph.D Research Scholar,**
**Registration no: 17-R-6341800**
**Department of History and Archaeology, Maharshi Dayanand University, Rohtak.**

## भूमिका :

पश्चिमी साहित्य और दर्शन ने भारतीय राष्ट्रवादियों को स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों से प्रेरित किया, जिससे उन्हें अपने देश के लिए एक स्वतंत्र और न्यायपूर्ण भविष्य की कल्पना करने में मदद मिली। फ्रांसीसी क्रांति, अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम जैसे अंतर्राष्ट्रीय आंदोलनों ने भारतीय राष्ट्रवादियों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की भावना को मजबूत किया। ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ओर औपनिवेशिक शोषण ने भारत में गरीबी, अकाल और भुखमरी को बढ़ाया, जिससे भारतीय जनता में असंतोष और आक्रोश पैदा हुआ, जो राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत करने में सहायक हुआ। क्रांतिकारियों के सिद्धांत और कार्यक्रमों का जहाँ तक प्र"न है, वे कांग्रेस के सिद्धांतों से बिल्कुल अलग थे। कांग्रेस की उदारवादी नीतियों से जब कुछ प्राप्त नहीं हुआ तो भारतीय नौजवानों में इस प्रमुख राष्ट्रीय राजनीति की आलोचना की और एक अलग रास्ता चुना जिसमें "ाोषणकारी और आक्रामक नीतियों पर प्रहार ही नहीं किया बल्कि ब्रिटि"ा अधिकारियों में भय का वातावरण भी बनाया। इस शोध पत्र का उद्देश्य मांड्यम पार्थसारथी तिरुमलाचार्य के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में वैश्विक स्तर पर उनके संघर्ष को वर्णित करना है तथा इनके क्रांतिकारी संघर्ष को उजागर करना है। इतिहास लेखन में ऐसे ही कई विभूतियों के बलिदान एवम् संघर्ष कागजों में दब कर रह गए जिनको समाज के सामने लाना बहुत महत्वपूर्ण कार्य है जिससे इनको सम्मान मिल सके तथा इनसे समाज को प्रेरणा मिले।

**मूलशब्दः** राष्ट्रवादी, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व, अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन, औपनिवेशिक शोषण, उदारवादी नीतियां।

## प्रस्तावना

मांड्यम पार्थसारथी तिरुमलाचार्य (1887–1954), जिन्हें सामान्यतः एम.पी.टी. आचार्य या पी.बी. आचार्य के नाम से जाना जाता है, एक प्रमुख भारतीय क्रांतिकारी, अराजकतावादी (दंतबीपेज), और औपनिवेशिक–विरोधी कार्यकर्ता थे। उनकी राजनीतिक भूमिका भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, वैश्विक समाजवाद, और अराजकतावादी विचारधारा को जोड़ने में महत्वपूर्ण थी। 1887 में चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) में एक ब्राह्मण परिवार में जन्मे, उनके पिता पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट में कार्यरत थे, और उनके पूर्वज मैसूर से थे। आचार्य का जीवन राष्ट्रीयता, साम्यवाद, और अराजकतावाद के बीच वैचारिक यात्रा का प्रतीक है।

## प्रारंभिक राष्ट्रवाद और क्रांतिकारी गतिविधियाँ (1900–1910)

आचार्य का राजनीतिक जीवन स्वदेशी आंदोलन के दौरान शुरू हुआ, जब भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ जनजागरण बढ़ रहा था। अपने भाई मांड्यम श्रीनिवासाचार्य के साथ, आचार्य ने तमिल क्रांतिकारी कवि सुब्रमण्यम भारती (महाकवि भारती) के साथ मिलकर काम किया। उन्होंने ब्रिटिश सेंसरशिप से बचने के लिए फ्रांसीसी शासित पुदुच्चेरी में प्रिंटिंग प्रेस स्थानांतरित किया। 1908–1910 के दौरान, उन्होंने इंडिया (अंग्रेजी पत्रिका) और विजया (तमिल साप्ताहिक) का प्रकाशन किया, जो औपनिवेशिक–विरोधी प्रचार, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, और साम्राज्यवादी नीतियों की आलोचना को बढ़ावा देता था। 1909 की डाक प्रतिबंधों के बावजूद, यह प्रेस क्रांतिकारी विचारों का केंद्र बना। फ्राँस में मैडम कामा को उनके पत्र बन्देमातरम् के प्रकाशन में आचार्य उनको काफी सहयोग दिया करते थे। विश्व के प्रमुख संगठनों एवम् तत्कालीन सामाजवादी आंदोलन के नेताओं से भी उन्होंने संपर्क स्थापित किये जिससे ब्रिटेन पर दबाव बनाकर शोषणकारी एवम् आक्रामक नीतियों से मुक्ति प्राप्त की जा सके।

गुप्त संगठनों में भागीदारी : 1909–1910 में, आचार्य लंदन के इंडिया हाउस (वी.डी. सावरकर जैसे क्रांतिकारियों का अड्डा) से जुड़े। वहाँ उन्होंने निर्वासित भारतीय क्रांतिकारियों के साथ नेटवर्क बनाया और भारत में साहित्य की तस्करी की। आचार्य और पी. एस. कान्खोजे सैन्य प्रशिक्षण लेने के लिए मोखको की सेना में भर्ती हो गये। मोरक्को भी स्पेनी साम्राज्यवाद का शिकार था जो भारत की तरह मुक्त होना चाहत था। दोनों ने अपने नाम मुस्लिम रखकर सैन्य प्रशिक्षण लेकर वापिस फांस आ गये। सैन्य साम्रागी तैयार करने का भी प्रशिक्षण लिया और अनेक लघु पुस्तिकाएँ प्रकाशित करके भारत के विभिन्न प्रान्तों में मेजते रहे ताकि ब्रिटिश साम्राज्यवाद को देश से उखाड़कर फेंका जा सके। उन्होंने उन देशों के क्रांतिकारियों से भी सौहार्द सम्बंध बनाये और समन्वय भी स्थापित किया गया जो अपने देश की स्वतंप्त कराने के लिए कार्यरत था। इस दौर में आचार्य ने सांस्कृतिक और आर्थिक प्रतिरोध पर जोर दिया, जो ब्राह्मण बौद्धिकता और जमीनी आंदोलन का मिश्रण था।

साम्यवाद और अंतरराष्ट्रीय गतिविधियाँ (1920 के दशक)

ब्रिटिश निगरानी के कारण यूरोप में निर्वासित होने के बाद, आचार्य ने मार्क्सवादी–लेनिनवादी विचारों को अपनाया और सोवियत संघ के साथ सहयोग किया। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) की स्थापना : 1920 में ताशकंद में, आचार्य ने एम.एन. रॉय और अन्य के साथ मिलकर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की, जो कॉमिन्टर्न (कम्युनिस्ट इंटरनेशनल) के तहत भारत की पहली औपचारिक कम्युनिस्ट संगठन थी। इस समूह ने सशस्त्र विद्रोह और श्रमिक आंदोलन के लिए मैनिफेस्टो तैयार किए, हालाँकि आंतरिक मतभेदों (जैसे रॉय का अंतरराष्ट्रीय समर्थन न जुटा पाना) ने इसके प्रभाव को सीमित किया।

**कॉमिन्टर्न के साथ कार्य** : 1922–1923 में बर्लिन में, आचार्य ने लीग ऑफ ऑप्रेस्ड नेशनलिटीज (कॉमिन्टर्न समर्थित संगठन) में काम किया। उन्होंने भारतीय नेटवर्क में राजनीतिक साहित्य वितरित किया, जिसमें साम्यवादी प्रचार के साथ–साथ अराजकतावादी सामग्री भी शामिल थी। यह उनकी वैचारिक लचीलता को दर्शाता है।

**अराजकतावाद की ओर झुकाव** : 1920 के मध्य तक, बोल्शेविक केंद्रीकरण से निराश होकर, आचार्य ने अराजकतावाद–सिंडिकलिज्म को अपनाया। उन्होंने लियोन ट्रॉट्स्की के फोर्थ इंटरनेशनल से ढीले संबंध बनाए और केंद्रीकृत समाजवाद के बजाय श्रमिक परिषदों की वकालत की। इस दौर में आचार्य ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को यूरोपीय श्रमिक आंदोलनों और फासीवाद–विरोधी संघर्षों से जोड़ा।

## बाद के वर्ष और विरासत (1930–1954)

1930 के दशक में भारत लौटने के बाद, आचार्य ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रियता बनाए रखी :

**श्रमिक और किसान आंदोलन** : उन्होंने सिंडिकलिस्ट रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया, हड़तालों और किसान विद्रोहों का समर्थन किया, और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की उदारवादी नीतियों की आलोचना की। उनके लेखन ने स्वतंत्रता संग्राम के वामपंथी गुटों को प्रभावित किया।

**स्वतंत्रता के बाद का चिंतन** : 1947 के बाद, आचार्य ने बंबई में शांतिपूर्वक जीवन बिताया और अपनी आत्मकथा रेमिनिसेन्स ऑफ एन इंडियन रिवॉल्यूशनरी (1991 में मरणोपरांत प्रकाशित) लिखी, जिसमें उन्होंने

विभाजन और नव–औपनिवेशिकता की आलोचना की। 1954 में उनकी मृत्यु हुई, और उन्हें 'भूला हुआ क्रांतिकारी' के रूप में याद किया जाता है।

आचार्य ने कोई औपचारिक राजनीतिक पद नहीं संभाला, लेकिन उनकी वैचारिक और संगठनात्मक भूमिका उल्लेखनीय थी। उनकी विचारधारा का विकास–राष्ट्रवाद से साम्यवाद और फिर अराजकतावाद–भारतीय वामपंथी आंदोलनों की जटिलता को दर्शाता है। उन्होंने एम.एन. रॉय और बाद के दलित और श्रमिक कार्यकर्ताओं को प्रभावित किया। हालांकि, उनकी ब्राह्मण पृष्ठभूमि ने जन–आकर्षण को सीमित किया, लेकिन उनकी वैश्विक एकजुटता की दृष्टि ने पोस्ट–औपनिवेशिक वैश्विकता की नींव रखी।

## निष्कर्ष

मांड्यम पार्थसारथी तिरुमलाचार्य (एम.पी.टी. आचार्य) का जीवन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से वैश्विक अराजकतावाद तक की यात्रा न केवल एक व्यक्तिगत क्रांति की कथा है, बल्कि उपनिवेशवाद–विरोधी संघर्षों की वैश्विक जटिलताओं का प्रतिबिंब भी। 1887 में मद्रास में जन्मे इस ब्राह्मण विद्वान ने लंदन के इंडिया हाउस से लेकर मॉस्को की कम्युनिस्ट गतिविधियों तक, और फिर बर्लिन, एम्स्टर्डम तथा मुंबई की सड़कों पर, साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और राज्य–केंद्रित क्रांतियों के खिलाफ अटूट विद्रोह का प्रतीक बनाया। उनकी प्रारंभिक राष्ट्रवादी उग्रता, जो 1910 के दशक में भारतीय स्वतंत्रता समिति के माध्यम से फूटी, धीरे–धीरे रूसी क्रांति के बाद कम्युनिस्ट अंतरराष्ट्रीय की केंद्रीकृत संरचना से मोहभंग में परिवर्तित हो गई। 1920 के दशक में अराजकतावादी विचारधारा की ओर मुड़ते हुए, उन्होंने श्रमिक संघों, अहिंसक प्रत्यक्ष कार्रवाई और अंतरराष्ट्रीय एकजुटता को अपनाया, जो गांधीवादी अहिंसा से प्रेरित होते हुए भी उससे कहीं अधिक कट्टरपंथी थी।

आचार्य की यह यात्रा हमें सिखाती है कि स्वतंत्रता कोई एकल पथ नहीं, बल्कि निरंतर सवालों और संघर्षों की श्रृंखला है। उन्होंने भारतीय संदर्भ में अराजकतावाद को न केवल सैद्धांतिक बहस तक सीमित रखा, बल्कि जापानी और चीनी अराजकतावादियों से पत्राचार के माध्यम से इसे वैश्विक संवाद का हिस्सा बनाया। उनकी रचनाएँ, जैसे ष्व्हाट इज एनार्किज्म?ष और ष्रेमिनिसेंसेज ऑफ एन इंडियन रेवोल्यूशनरीष, आज भी उपनिवेशोत्तर दुनिया में राज्य–विरोधी आंदोलनों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। 1954 में मुंबई में उनका निधन होते हुए भी, आचार्य का विरासतकृजो भारत में अराजकतावाद की विस्मृत धारा को पुनर्जीवित करने का आह्वान करता हैकृहमें याद दिलाता है कि सच्ची आजादी अराजकता नहीं, बल्कि सहयोग, स्वायत्तता और न्यायपूर्ण समाज की रचना है। उनकी कहानी, अंततः, एक ऐसे विश्व की कल्पना करती है जहाँ कोई साम्राज्य न हो, कोई शोषण न हो, और हर व्यक्ति अपनी क्रांति का स्वामी हो।

## REFERANCES:


1. G.S. Deol, Role of rhw Ghadr Party in the national Movement Delhi, 1966.
2. K.K Banerjee, Indian Freedom Movement : Revolutionaries in America, Calcutta, 1969
3. "M.P.T Acharya," Freedom: The Anarchist Weekly (15:33 (August 14,1954),13.
4. A.C. Bose, Indian Revolutionaries Abroad, Patna,1972
5. R.P. Dutt, India Today, London, 1940.
6. C. S. Subramanyam, M.P.T Acharya, his life and Times: Revolutionary Trends in the Early Anti - Imperialist Movements in South India and Abroad (Madras? Institute of South Indian Studies 1995),176–177
7. M.P.T Acharya, "The Indian Struggle," The world August, 1946, 11.
8. Muzaffer Ahmad Communist Party of Party of India, Year formetion, 1921-23 (calcutta 1959)
9. V.D. Savkar, The Indian War of Independence, Bombay, 1947.
10. H.B. Sharda, Armed Struggle for freedom from 1857 to 1957,Poona,1958
11. S. A(cd) Waiz, Indians Abroad Bombay, 1957
12. Randhir Singh, Ghady Party, Bombay, 1945.
13. J.C. Chatterjee, Indian Revolutionaries in Conference, Calcutta 1962.

14. M.N. Roy, A Program for the Indian National Congres" (1922).
15. Anarchy ar Chaos: MPT Acharya and the Indian Struggle for Freedom London: Hurst Publisher, forthcoming 2023.
16. T.R. Sarin, Indian Revolutionaries Abroad, Delhi,1979.